

दसकर्मजः यन्मिनिष्टायममात्यो निचरत्वा निदमहत्तमच तगमुन्कि रा मि

[illegible]

卷之四

सि॥ देवमान॥ ॐ स्वस्ति न इन्द्रो विहेति॥ दुदु॥ ॐ प
 यः पृथिव्या॥ ॐ ॥ ॐ दक्षिणा प्रो॥ ॐ त॥ ते जो सि॥
 म॥ ॐ म॥ वाता॥ ॐ ग॥ यते म॥ ॐ क्षरं ति सि॥ न्यवः म॥
 धीर्न संतोषधीः म॥ ॐ न॥ ते मु॥ तोष सो म॥ ॐ म॥ त्याधि
 व॥ ॐ रजः मु॥ ॐ द्यौरस्तु नः पिता॥ म॥ ॐ मा॥ नो वनस्य
 तिर्म॥ ॐ मा॥ ॐ ॐ सु॥ सूर्यः मा॥ ॐ धी॥ र्गा॥ वो भव॥ न॥ ते नः म॥
 ॐ म॥ ॐ ॥ सा॥ र॥ ॐ न॥ मः शं॥ भवा॥ य॥ च॥ ॐ जे॥ ल॥ ॐ प॥ वि
 त्रे॥ षो॥ ॐ च॥ न॥ ॐ य॥ द॥ इ॥ का॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ग॥ न्य॥ द्वा॥ रा॥
 ॥ सि॥ ॐ ॐ ॐ ज॥ वि॥ दा॥ ॥ दि॥ हि॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ दे॥ व॥ ॥ अ
 क्ष॥ त॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ मि॥ म॥ द॥ न॥ पि॥ या॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अ॥ षो॥ ष

स्वव

७

क्षमपुं प्रणिमच्युं ३

दृष्टमाती १

तेश्वभानवो विप्रसति सो जा विन्दते हरि॥ जजका
 ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते जसह जं पुरस्ता आ
 य॥ ॐ यज्ञोपवितं परमं स्तुते ज॥ स्वा॥ ॐ या फल नी॥
 आ॥ इ॥ का॥ ल॥ ॐ द॥ स्वः प॥ वि॥ त्र॥ म॥ सि॥ ॐ प॥ च॥ प॥ ता॥ का॥ ॐ
 अ॥ स्मा॥ के॥ मि॥ न्द्र॥ स॥ मि॥ ते॥ पु॥ ॐ जे॥ ष॥ स्मा॥ के॥ वी॥ रा॥ उ॥ त॥ ले
 भ॥ व॥ त्व॥ र॥ मा॥ उ॥ दे॥ वा॥ अ॥ व॥ ता॥ ह॥ वे॥ पु॥ ॐ त॥ तो॥ य॥ ज॥ मा॥ ने॥ न
 पू॥ ष्य॥ भा॥ ज॥ ने॥ ॥ अ॥ य॥ वा॥ क्य॥ ॐ य॥ ज॥ मा॥ न॥ स्य॥ अ॥ म॥
 के॥ का॥ म॥ न॥ या॥ ना॥ न्दि॥ मु॥ र॥ व॥ पू॥ जा॥ के॥ तुं॥ पू॥ ष्य॥ भा॥ ज॥ न॥ सं
 यो॥ ज॥ या॥ मि॥ ॐ स॥ यो॥ जा॥ त॥ श॥ शं॥ के॥ श्रे॥ ष्ठ॥ व॥ द॥ नं॥ स॥ व
 त्र॥ का॥ मो॥ प॥ दं॥ श्रु॥ गारं॥ ल॥ लि॥ तं॥ सु॥ सो॥ म्य॥ व॥ द॥ नं॥ श्री॥ वा॥ म॥ दे
 वो॥ त॥ रं॥ द्यो॥ रं॥ द्यो॥ रं॥ क॥ लो॥ ले॥ व॥ द॥ नं॥ द्यो॥ रं॥ मु॥ र॥ व॥ दं॥ क्षि॥ रो॥ प॥

नर

वतत्पुरुषं शुशाने वदन् ब्रह्मेन्द्रो जेष्ठः ॥ सिद्धिरस्तु
 कृपा ॥ यथा वा नेति ॥ ॥ ब्रह्मणे त्रिराचम्य ॥ अथ वा
 क्य ॥ सूर्याय ॥ ॐ कृष्णे नरजसा ॥ गुरु नमस्कार ॥ न्यासा ॥ क्र
 द्यपात्रात्मा पूजांते ॥ ॥ ततो द्वा रा च न ॥ ॥ ॐ तत्सत्ता जामि ॥
 ॐ देवस्य त्वा ॥ गणा नां त्वा ॥ बृहस्पते ॥ ॐ चोत्तोरिभंग ॥
 ॐ द्वा रो देवी ॥ ॐ हिरण्यगर्भ ॥ ॐ सप्तर्षय ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञा
 ॥ ॐ विष्णोरराते ॥ ॐ नमः संभवाय ॥ ॐ आजिष्णुकलत्रा
 ॥ द्वा रा च न विध्येत सर्वं यरि पूर्णमस्तु ॥ ॥ श्रादा द्वा रा च न
 जां जलि ॥ षडङ्ग पूजा ॥ ॐ सद्यो जाता यश ॥ ॐ कामदेवा यश
 ॐ धीरो यश ॥ ॐ तत्पुरुषा यश ॥ ॐ ईशाना यश ॥ ॐ सद्यो जाते
 ॐ यमसितयन्त्रमग्निर्देवानाम भवत्पु रोगाः ॥ अस्य होतुः पु
 ति श्रुते स्याद्विष्वा हा कृत् ॐ हविरिन्द्रदेवाः ॥ ॐ कामम
 ॥ ३३ ॥

यस्य वितर्कममुश्नो दिवे दिवे काममस्य भ्यर्चुं सावीः कामस्ये
 हि क्षयस्य देव भ्रूरयो धिया वाम भाजः स्यामः ॥
 ॐ या ते रुद्रः शिवा तनुरघो रा पावका शनतया
 नस्तं ॥ ॐ तत्पुरुषं वदन् ब्रह्मेन्द्रो जेष्ठः ॥ सिद्धिरस्तु
 कृपा ॥ यथा वा नेति ॥ ॥ ब्रह्मणे त्रिराचम्य ॥ अथ वा
 क्य ॥ सूर्याय ॥ ॐ कृष्णे नरजसा ॥ गुरु नमस्कार ॥ न्यासा ॥ क्र
 द्यपात्रात्मा पूजांते ॥ ॥ ततो द्वा रा च न ॥ ॥ ॐ तत्सत्ता जामि ॥
 ॐ देवस्य त्वा ॥ गणा नां त्वा ॥ बृहस्पते ॥ ॐ चोत्तोरिभंग ॥
 ॐ द्वा रो देवी ॥ ॐ हिरण्यगर्भ ॥ ॐ सप्तर्षय ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञा
 ॥ ॐ विष्णोरराते ॥ ॐ नमः संभवाय ॥ ॐ आजिष्णुकलत्रा
 ॥ द्वा रा च न विध्येत सर्वं यरि पूर्णमस्तु ॥ ॥ श्रादा द्वा रा च न
 जां जलि ॥ षडङ्ग पूजा ॥ ॐ सद्यो जाता यश ॥ ॐ कामदेवा यश
 ॐ धीरो यश ॥ ॐ तत्पुरुषा यश ॥ ॐ ईशाना यश ॥ ॐ सद्यो जाते
 ॐ यमसितयन्त्रमग्निर्देवानाम भवत्पु रोगाः ॥ अस्य होतुः पु
 ति श्रुते स्याद्विष्वा हा कृत् ॐ हविरिन्द्रदेवाः ॥ ॐ कामम

ॐ अमिताभ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ब्रह्मण्यस्य ते ॥ अ
 वाहनादि ॥ ॥ आदित्य ॥ आकस्मिक ॥ इमं
 देवा ॥ अग्निर्मुखा ॥ उर्व्व्यस्वाग्नि ॥ बृहस्प
 ते ॥ अग्नि ॥ त्वरि ॥ शनो देवी ॥ कथानश्चित्र
 ॐ कैतुकं न्येन ॥ ता अस्य सूदो ॥ ॥ अथ ॥
 स्था मूलो ॥ बलि ॥ व्याश ॥ कृपा ॥ परशुरा
 म ॥ विभीषन ॥ मार्कन्देय ॥ हनुमान ॥ ॐ
 अथ स्थेवो निष ॥ महिद्यौः ॥ यस्य स्वर्ग
 ॐ तीर्त्वां यो रया ॥ रक्षशां भागो सिनिरस्तुं र
 क्ष इदमहं रक्षो भित्ति ॥ मीदमहं रक्षो व

उर ॥

३

वाक् इदमहं रक्षो वमन्ते मो नयामि ॥ द्युते नद्या
 वापृथिवी प्रोक्तवाथां वा यो वेतो काना मगिराज्य
 स्थेव तु स्याहा ॥ ॐ अथ पुं सहस्रमृषिभिः सहस्र
 कृतः सुमुदु इव पप्रथ ॥ सत्यः सो अस्य महिमा गृ
 णेशो यो यज्ञेषु विप्राज्य ॥ ॐ पुजापते न त्वदेता न्ये
 न्यो विश्वा रूपाणि परिता वभूव ॥ यत्कामा सो ज्ञु
 रुवस्तनो अस्तु देयं ॐ स्या मपतयोरयीणाम् ॥ ॐ
 सप्तः ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षंति सदम
 पुमादम् ॥ सप्तायः स्वपते लोकमीयुस्तत्र जाय
 तो अस्वपु ज्ञेयत्र सदी च देवौ ॥ मासाय श्रापक्षा
 य ॥ नक्षत्रा ॥ मुहुर्त्तय ॥ कार्त्तय ॥ योगाय ॥ कृत

नमः

वेश॥ उं सख स रा य॥ उं वै श वा रा॥ अरुणा य॥ कु
मारा य॥ मण्डला य॥ गरुडा य॥ रथा य॥ पञ्च
नदे॥ रत्ने गभा य॥ ब्रह्मणे॥ विष्म वैश॥ रुद्राय
२॥ कल्या य॥ चतुः श्रृंगाय॥ चतु द्वा रा य॥ अर्द्ध
मासा य॥ ३॥ अर्द्ध मासाः परुषं धिते मासा आद्य
नमः स्य नः॥ अहोरात्राणि मरुतो विहित हृष्टं स्रु
यतुते॥ अर्द्धेनः पक्षतिर्वा यो निर्ध पक्षति रि नुस्य
तृतीया सोमस्य चतु र्था दित्ये पंचमी न्द्राण्ये
षष्ठी मरुता णु सप्तमी बृहस्पतेरष्टमी॥ नवमी
ध्यातुर्दशमी नुस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी

उभ॥

५

यमस्य त्रयोदशी॥ इन्द्रा ज्योः पक्षतिः सरस्य त्वे
निपक्षति मित्रस्य तृतीया पाञ्चतु र्थी नित्रे
त्ये पञ्चम्य जनीषो मयोः षष्ठी सूर्या एता पुंसप्त
मी विष्मोर षष्ठी पूरुषो नवमी त्वष्टुर्दशमी नु
स्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यम्यै त्रयोदशीः
डावापृथिवीर्दक्षिणं पार्श्वं विश्वेषां देवानां सु
तो रं॥ ३॥ नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रिभ्यः स्वाहा हा
रात्रेभ्यः॥ अर्द्धमासेभ्यः० मासेभ्यः० त्रैतुभ्यः० त्रै
तुदेभ्यः० सख स रा य० डावापृथिवीभ्यां उं च
न्दाय० सूर्याय० वसुभ्यः० रुद्रेभ्यः० दित्येभ्यः०

मरुभ्यः० वि० वे० यो दे वे भ्यः० मूले भ्य० शारवा
 भ्य० वनस्पते भ्य० पुष्पे भ्य० फले भ्य० होष
 श्री भ्यस्याहा॥ ॐ सुपर्णपाज्जे न्य आतिदीद
 सोद विदाते वायवे बृहस्पतये वाचे स्यतये पे
 उरा जोरज आनारिक्षः प्र वो म ऊ र्म स्यते नदी
 पतये आ वा पु धि वी यः कूर्मः॥ ॐ काणा शि शु
 महिना ॐ हि न्य ते स्य दी दि वं॥ विश्वा प लि सु
 तोर स दि वः॥ ॐ सो गे यो गे त व सारं गा जे र ह वा
 मह सर वा य इ न्द्र मूर्तये॥ ॐ नै त व स्थे य त वि
 ते न्यं तु मा सार क्ष तु ते ह विः॥ सं व त्स र से य तं

उभ॥

दद्यात्तु नः पुजाभ्यपरिपातु न॥ ॐ सम्यत्सरोसि
 परिवत्सरोसि दावत्सरोसि द्वत्सरोसि वत्सरोसि
 उपवत्सो कल्पं तां महोरात्रा स्तोकल्पं तां मर्द्धमासा
 सो० मासा सो० मृतवत्सो० ॐ सम्यत्सरसे० पुत्या
 सत्यै र्मं जां चे पु व सार य सु पर्ण वि द सि त या दे व
 त यां गिर स्व ध्रु वः सी द ॥ ॐ अ श्व सु पर्णे गो
 मृ ग स्थे प्रा जा प त्याः कृ ष्ण ग्री व भा गे रोर रा पु
 र स्ता त्सार स्थ ती मे ष्य ध्य स्ता तं ध्रु वौ रा श्वि ना व
 यो रा मो वा ह्नाः सो मा पौ ष्मः स्या मो ना भ्या ॐ सो
 यं या नौ श्वे त श्व कृ ष्ण श्व पार्श्व यो स्त्वा ह्ना लोः

स

मशक्तौ ब्राह्मणे वाचयः श्वेतः पुच्छ इन्द्राय स्वयं
 स्थायकै ह वै स्मिन्मोक्षमनः ॥ ॐ त्रयं पुरो हरिकेश
 : सूर्यरश्मिस्तस्यार्थगतसश्चरथो जाश्च सेनानी
 ग्रामणो पुजिकस्थलाचक्रतुस्थलाचाप्सरसो
 दंक्षी नवः प्रशवो हतिः पौरुषो वधो प्रहृतिस्तै
 भ्यो नमो असुते नो वसुते नो मृदयन्ते न यं
 द्विषो यश्च नो देहि तमेषां यं भेदध्वमः ॥ ॐ
 ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृ
 थिवी अनेह सा ॥ पूषा नः पातु दुर्गिता वृधोरक्षा
 मा किर्त्तौ अघशङ्कुं सयीशतः ॥ ॐ अश्विनाते

३५॥

वृत्ता २

६

जसा चक्षुः प्राणे न सरस्वती वीर्यं वाचेन्द्रो वले
 नेत्रा यद्व्युरिन्द्रिय ॥ ॐ आमं देरिन्द्र हरिभिर्य
 हि मयूररो मभिः ॥ मात्या केचिन्निरयमान्य
 नेपाशि नोति यन्वेयताग्रं इहि ॥ ॐ यत्र वाः
 णाः सपातनिकुमारा विशिषा इवः तद्गुणो
 बृहस्पतिरदितिः शर्मजकृतु विश्वा हाशर्म
 जकृतुः ॥ ॐ उदुत्यं जातयेदसं देववहनिः
 केतवः ॥ इमे विश्वा य सूर्य ॥ ॐ पंचनेद्यः
 सरस्वती मयियंति स सुतसः ॥ सरस्वती तुषं

चेष्टासोदेसे भवं सरित् ॥ ॐ हिरण्यगर्भः
 : समवर्ततागे भूतस्य जातः पतिरेक आसि
 रि ॥ सदाकारं पृथिवीद्यामुते मां के समे देवा
 य ह विषादिव्ये मः ॥ ॐ विष्णोः कर्माणि पश्य
 तय तो वृत्तानि पश्यसे ॥ इत्युच्यते सरवाः ॥
 ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यः श्वको नमो प्रभवाय
 च रुद्राय च नमः सर्वाय च ॥ पशुपतये च नमो
 नीलयात्राय च शितिकंथाय च ॥ ॐ आजिघ्रुक
 लेशं मह्यत्वा विशन्ति नृवः पुनरुच्यते विवर्तस्व
 स्तानः सहस्रं सुक्ष्मं रूपापयस्वती पुनश्चावि
 शताडुभिः ॥

ॐ चत्वारिंशं गात्रं यो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्ता
 सो अस्य ॥ त्रिधा वक्ष्ये वृषभेश्वरीति महो देवो
 मया प्रोक्तः आविवेसः ॥ मास्मादिपक्षार्चने विध्यो ॥
 पंचवलि ॥ ॐ गणानां त्वा गणपतिं ॐ हवामहे ॥
 प्रियानां त्वा प्रियपतिं ॐ हवामहे ति श्रीनां त्वाति
 थियपतिं ॐ हवामहे वसो मम ॥ आह मजानि गर्भ
 धे मा त्वमजासि गर्भम ॥ ॐ जातवेदसे सुनवा व
 सोममराती हतो निदहाति वेदः स न पश्यति द
 दुर्गाणि विश्वानां देवसिंधुः दुरितात्यग्निः ॥
 ॐ इमारुद्राय तव से कपर्दिने क्षयदीलाय प्र

पुरामहेमतीः॥ यथा समसद्विपदे चतुष्येदवि
 श्वं पुष्टिं ग्रामे अस्मिन्नेनातुरं॥ अं घृतं घृतपा
 वानः पिवत वसां वसापावानः पिवता नोरिक्ष
 स्पह विरसि स्वाहा॥ दिशः पुदिश आदिशो वी
 दिश उदिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ अं नमो व भुव
 यः व्याधि नै नानां पतये नमो १ भवस्य हे त्वे
 जगतां पतये नमो १ रुद्रा यातता यिने क्षत्रा
 तां पतये नमो नमः सूता या हं त्वे वना नां पत
 ये नमो १॥ अं असंख्याता सहस्राणि यरुद्राः
 अधि भूम्याम्॥ तेषां सहस्रं योजने वयं न्या

८

सप्तमस्तोत्रकः शुभद्वि कां कां पीत वासिनीम्॥ २

५

नित नमसि॥ अं अन्वे अन्विके अन्वालिके नमा
 नयतिके श्वेनं परिस्वति दुर्गा लिखि श्वाना ^{अं नमो}
 ये वसि ^{अं नमो} ॥ ॥ दुर्गे पूजा॥ अं
 दीर्घाय स्वाय वलाय व र्चसे सुपुजा स्वाय
 सुवीर्ज्याय सहसा अथो जीव सरद सतम्॥
 स्वगां॥ ॥ अं दधि काशो अकारि क्षिंत रिक्ष सु
 रभिर्न मुखां वृणाप न आ मुर्ध रिक्ता रिक्ता
 अं जदद्य के च॥ अं त्वं ज विस्त दा॥ अं चां फल
 नी॥ दीर्घाय स्वा॥ श्री श्वते लक्ष्मी॥ गणः
 जो या स॥ ॥ अं नमो गतो भ्यो॥ अं आ रं जोः

विना रिक्ता ॥ ५

पंजि श्वोर श्वस्य वाजिनः सुरभि नो मुखा कर त्वयाऽ आयुः

हृषामि रक्तं शतं मातरं पूरुह पितरं च प्रय
 तेश्वरं पंचाय न पूजा ॥ श्री स्वयं ॥ ॐ न
 राय नो ये ॥ ३ ॥ महादेवाय ॥ गृह लक्ष्मी ॥
 इष्टदेवता च ॥ ॐ आकाशे नर जसा ॥ ॐ विष्णो
 र रातमसि ॥ ॐ नमः संभवाय च ॥ ॐ श्री श्वते ल
 क्ष्मी सपान्मा ॥ ॐ नमस्तु सर्वेभ्यो येको चतुर्थे
 पृथिवी ये मनुजैर्भ्यो सर्वेभ्यो नमः ॥

ॐ जातवेदस्य ॥ पंचवायुदोदुपूजा ॥ ॐ म
 हि शोः पृथी च न ॥ ॥ अक्षत ॥ ॥ ॐ अक्षतर
 मृतमप्सु मेव जमपा मुत प्रसतिष्य श्वा भः
 वत वाजिनः देवी रापो यो वक्रुर्मिः प्र भर्तिः वा
 कुन्मा लाज सा से नायं वा जं पुं सेत ॥ ॥ फले
 ॐ तेव वायु बृहस्पते ॥ ॥ धारि ॥ ॥ ॐ ते जो सि
 ला ॥ ॥ ॐ या ते रुड शिवा ॥ ॥ मा वि ॥ ॥ ॐ अ
 स्माक मिन्दु ॥ ॥ सी स्व मुं ॥ ॥ ॐ श्री श्वते ॥ ॥
 स्कं ॥ ॥ ॐ समितं संकपे था पुं संपृ यो रो
 विष्णु सुमनस्य मानो इष मुर्गा मभिसंवसाः

नौ॥ सम्यामनां संवत्तासमुच्चिता न्याय
 रं अगे पुरीष्यायि या भवेत्यनेन इषमूर्जं यजे
 माना यवे हि ॥ ॐ चतुस्वस्तिपयः ॥ ॐ स्वस्ति न
 इन्द्रो ॥ ॐ पयः पृथिव्या ॥ ॐ विष्णो ररात ॥ ॐ
 अग्निर्देवता ॥ ॐ द्यौः शान्तिः ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ
 रसि ॥ ॥ दीप ॥ ॐ तेजो सि ॥ ॥ नैवेद्या ॥ ॐ अ
 न्नपते ॥ ॥ फल ॥ ॐ या फल नी ॥ ॥ प्रतिष्ठा ॥
 ॐ मनोजोति ॥ ॥ महात्मा जप ॥ स्तोत्र ॥ ॐ शि
 वं शिवकरं ॥ इष्टदेवो नमस्तुभ्यं ॥ अत्र गंधा
 दि ॥ ॥ धंकादिनका हारा पूजा ॥ शान्तिके पु १०

स्वस्त्यय

स्तिका ॥ जो सिं मृत्युं जया ॥ आ चो जुं यो गि निव जय
 ब्राह्मणं ॥ ॐ स्वस्ति नो मि मिता मश्वेणा भगं स्वस्ति
 देवा ॥ दितिर्नरे ॥ ॥ ॥ स्वस्ति पयः ॥ अ सु रो द्वा तु
 नः स्वस्ति या वा पृथिवी स चेत्तु ना ॥ स्वस्तये वा
 यु मुपवु वा मह सोमं स्वस्ति भुवः ॥ स्वस्तये वा
 ह स्वस्तिं सर्गं ॥ स्वस्तये वै आदित्या सो भवेत्तु नः
 विष्णो देवा नो अथा स्वस्तये वै श्वानरो वसुरग्निः
 स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्यं हसः स्वस्ति मित्रा य
 रुना स्वस्ति पथ्यो रेवति ॥ स्वस्ति न इन्द्र आग्नि श्वः
 स्वस्ति नो अदिते क वि स्वस्ति पंथा मनु चो मस्त

देवा अवदन्तु भवः स्वस्तये ३

श्रीयचन्द्रमसाविवृणुनर्द्व्यतायुताजानतासं ११
 गमेमहिस्वरस्ययनंताक्ष्यमरिष्टनेमिमहभूत
 वायुसंदेताता॥ असुरमिन्दुसरवसमत्सुवह
 द्योतौनामविमार्सहेमा॥ अयंहोमचमांगिरसंग
 यंचस्वस्त्यात्रेयमनेसाचताक्ष्यप्रयत्पाणिद्वार
 णापुपद्येस्वस्तिसंबोदेष्यभयनोअस्तु॥ ॐ कणि
 केदजेनुष्यप्रवृवाणउर्यतिवाचमरितेवनावं ११
 सुमंगलोलोकनेभवोसिमात्वाकाचिदभिमा
 विष्वाविंद॥ मात्वायेनउदद्यान्मासुपमा
 मात्वाविदियुमावीरोस्तापित्यामनुपदिशंकलि
 केदसुमंगलोभदुवादीवदेह॥ मानस्येनईशत
 अवकन्ददक्षिणतोमृहाणसुमंगलोभदुवादीवकुं॥ ह

माद्यशंसोवहृद्वेदमविद्येसुवीरा॥ १॥ पुदक्षिण
 दनिउट्टणानिकारवोतवोवनेतुधोशकुंतयः॥
 उभेताचोवदनिसामगारवगायत्रेवत्रैषुभंचानु
 राजति॥ उजातेवशकुनेसामगायसिबलपुत्र
 इवसवणेषुसंशविदभेववाजिद्रिभूमतिरपि
 त्यासर्वतोःशकुनेभदुमावदविश्वतोःश
 कुनेपुण्यमावदः॥ आवदस्तंशकुनेभदुमा
 वदतुमीमासीनःसुमतिचिकिहीनःयदुत्प
 तंवदशिकेरीयथावहृद्वेदसुवीराः॥ ॐ भदु
 वददक्षिणतोभदुसुनेरतोवदभदुवदपुरस्तां
 मविदये २

नो बद्र भद्र पश्चात्कोपि जले ॥ भद्रं बद्र पुत्रे भद्रं बद्र
 गृहेषु च भद्रं मस्माकं बद्रं भद्रं नो अ ॥ ~~००००००~~
 भद्रं बद्रं मध्यं स्त्री नो बद्रं भद्रं रत्न आः बद्रं भद्रं नः
 सर्वं नो बद्रं असपत्नं पुरस्तात् नः शिवं दक्षिणाक्षः ॥ त
 वि ॥ अ भयं सततं पश्चात् भद्रं सुतरं नो गृहे यो
 वना निमहं सै सि जिग्युषा निवडुं दुभिः ॥ शकं
 तके पुदक्षिणं शतपत्रां भिमो वद्र आ वद्र स्त्वं श
 कु ने भद्र मा वद्र तु ह्मी मा सी नः सुमतिं चि वि
 यिनः यदु त्पदं वद्र शिकर्क र र्थं था वृ ह्द दे म वी र
 पे सु वी रा ॥ ॐ आ भुः शिशा नो वृष भो न भी मा दनाः

घनः क्षोभ न श्चर्ष नी नाम ॥ संक्रंद नो निमिषः
 एक वीरुः शतं पुं से नाऽ अ जे यत्सा के मिन्दुः ॥ य
 जा ग्ग तो हर मुदे ति देवं तदु स्यु स्यु स्यु तथै वै ति दू
 रं ग मं ज्यो तिषां ज्यो तिरे कं त न्मो म नः ॥ सि व सं क
 ल्प मस्तु ॥ ॐ वि भा ॥ दू ह्ति पितु साम्य म द्वा यु दः
 व्य द्यो जे पता व वि द्क ते वा त ज्ञे तो यो अ भिर क्षा ति
 ग म ना पु जाः पु षो ष पु र्वा वि रा ज ति ॥ ॐ न म रा
 रु डे म न्मो वऽ उ तो तऽ र्ष वे न मः वा कु भ्यां सु त ते
 न मः ॥ ॐ व यं पुं सौ म भु ते त व म नं पु जा वं त स चे
 म हि ॥ ॐ सु ष ते रु डे भा गः सह स्य सां वि के या तं ज
 प स्ये स्का हे ष ते रु डे भा गऽ आ षु स्ते षु ॥ ॐ अ व

स २ अथेवायपुस्तकाय भेदजगत्सु इमे वा यमे व्ये ३

रुद्र मदीम ह्यवदेव न्यस्य कम्॥ अथानो वस्य सुक्
रथधानेः॥ श्रेयसस्वरथधानीः
वक्रसा ययात्॥ भेषजमसि भेषजे॥ ॐ नमो के
एतते रुद्राय सते॥ ॐ आयुषं जगदये॥ ॐ शिवो ना
मासि॥ ॐ स्वस्ति न इन्द्रे ति प॥ ॐ द्यौ हशान्ति॥ शांति
के पुष्टिक॥ यल्लिए समता प्राता चोप्या संगोण
त्याके॥ चन्द्रनादि आशिर्वादा॥ ॐ नमः शंभवे
यचैति॥ द्यौः शान्ति॥ शांतिक स्वां विद्य॥ श्री लीला
ने संकेत्य दक्षिणा ता च न॥ परवार पूजा को
या॥ न्यासेलिका ये॥ विसर्जनथा य॥ हुद्दयंतम

73

स॥ स्थितिकासनसर्वं स्नाते॥ थंकादिं प्रजापतिश्चा
लाहती लं रन न हाय॥ लाहती स॥ चन्दनं स्थिति
को य॥ पूजा॥ प्र॥ प्रजापति मूर्तयश्च मासनं २॥
पुष्पं २॥ एवं हस्तार्घ्यं चन्दनं यत्नोपवित्तपुष्पं दं २॥
थ्यते लाहते तके॥ थंकादिं चात्याकले लाय॥ द्यौः
शान्ति॥ पंचवायुदोहमता किंसे सा॥ मा॥ ये भा॥
दिदं कवि य॥ द्दं वाता॥ सा॥ फो॥ दा॥ स॥ चो॥ गु॥ ब॥ य॥ ग्वा
ला॥ सकस्यातां वि॥ य॥ द्यौः॥ तां॥ की॥ तिते॥ को॥ स्य॥ त॥ क॥
प॥ जा॥ द्यौ॥ य॥ न॥ म॥ द्द॥ ना॥ दि॥ सि॥ फ॥ रा॥ ति॥ पु॥ ति॥ वा॥ तां॥
य॥ ज॥ मा॥ ना॥ भि॥ से॥ ख॥ च॥ न्द॥ ना॥ दि॥ आ॥ शि॥ र्वा॥ द॥ द्यौः॥ ता॥

वेति ते॥ यिलिनी न सम यदियके॥ थंकादिनं
 लंख्यो लहायकं प्रजापतिं द्याय॥ ॐ अश्वरु
 दिनमिन्द्र॥ साक्षि धाय॥ यजमानं केतांके॥ इति
 चोपूजाविधिः॥ ॥ देसवय॥ चोपूजायास्यानि
 य॥ जगौदकेयाय॥ त्रिराचंम्य॥ पुष्यभाजनं॥ अः
 द्यादिवाक्य॥ यजमानस्य यथा केर्मनिमित्य
 ॥ ॐ मंदभूदके वृद्धि श्राव्ये कर्तुं पुष्यभाजनं सः
 मर्पयां मिश्रा॥ गौरीपद्मासचौ मेधासावित्रिवि
 जयाजया॥ देवसेन्यास्य धास्या हा मातरो लोकमा
 तरः॥ हृष्टिपुष्टितथातुष्टि आत्मदेवत्वया सह॥

सिद्धिरस्तु॥ यथावानेति॥ पुष्यभाजनं सूर्यो
 जयामि॥ यजमानाचंभ्य॥ सूर्याय॥ मोहांधका
 रिति॥ गुरुनमस्कार॥ न्यास॥ अर्घ्यायात्मपूजां
 विष्णुदेवपूजा॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो अग्निर्देवेभ्यो
 नरदेवेभ्यो इन्द्रासतं वृद्धि॥ पुष्यं॥ माविपक्षे॥ मा
 तृपितामहि प्रपितामहि मातामहादिभ्यो इदमास
 नं वृद्धि॥ पुष्यं॥ षोडशमातृकेभ्यो॥ सप्तद्वारमातृकेभ्यो
 नवदेवदेवीभ्यो॥ कपिलादिपंचगेमातृकेभ्यो॥ ब्रह्मा
 न्यादेष्टमातृकेभ्यो॥ गणपतिस्वस्थानक्षत्रपालव
 हिद्वारांगणश्रीसूर्यनारायणादिपंचायनगणगु

रुनागगजेभ्योइदमासनं॥ब्राह्मननदिकेस्यराचाजे
 भ्योइदमासः॥एवंपादार्थं सर्वेखांदत्वा॥आचम्यः
 न्यासः॥गरीश्वराय अस्त्राय श्रुः अर्घ्यानादिमात्मय
 जातंकारयत्॥पुष्पभाजनं॥सप्तधायेति॥गोगास
 पूजा॥गयायेत्रत्मादि॥अर्घ्यानादिकेनाभ्युक्षनं
 अपवित्रेति॥संनोदेवीति॥जलंदत्वा॥सुवायाभ्यं
 तरसुचि॥विश्वेदेवपुष्पंदत्वा॥ॐ कृतव्यं॥ॐ
 दक्षाय श्रुः पितृपक्षः॥गोरीपुष्पेति॥॥ब्राह्मणादिस
 र्वेखांपुष्पंदापयत्॥अपसवेनपुष्पभाजनं॥अ
 द्वाक्य॥कर्तुंसतकयारंभेकरिडुबशरीरभूमिं

हाणांभुसंनिधानमस्तुमातृपितामहिभ्योस्तुसं
 निधानमस्तु॥॥जलाक्षतेनविश्वेदेवअग्रा
 हतः॥ॐ आमासवणीवतोविश्वेदेवसः॥आग
 तः॥दाश्या॥सादासुषःसुतः॥मातृपक्षआवाहः
 नः॥ॐ त्रीणिपदाविक्रमेविस्तुर्गापाअदाभ्यःअ
 नोवर्मा निवारयं॥ॐ विष्णोररातमति॥ॐ प्रतपिः
 सुस्तवदेविर्यणमृगोणभौमःकुचरोजिरिष्टा
 :रस्योरुषुत्रिषुविक्रमणेषुविदियन्तिभुवना
 निविश्वः॥ॐ द्विप्राक्राविपंतगो जागृवा॥समि
 धो॥विष्णोर्यत्परमंपदम्॥आवाहइष्टेवीश्वेदेवा
 दिसर्वेषांआवाहयिष्ये॥॥पुनर्विश्वेदेवादिसर्वे

रवांजवदलीफलहस्ताद्यं विष्णुदेव षोडशमा
 तृका ॥ मातृमाता महिः ॥ पितृपदं च ब्राह्मणा
 चार्थभ्यो हस्ताद्यं पुतेद्यं च नृनयसोपवीः
 ॥ ६ ॥ तत्पदपि अत्र गंधादिपर्यंतं ॥ अत्र संके
 ल्य ॥ विष्णुदेवादिसप्तद्वारमातृकाब्राह्मणा च
 र्यंतं ॥ यथादासेमानेन संकेल्य ॥ मण्डल ॥ ॐ म
 धुवातात्रेतायते मधुशरं तिसिन्धवः मा
 धीर्नसतोपधीः मधुनते नुतोषसो मधुम
 त्पार्थिवदुंरजः मधुद्वोरस्तु नः पिता ॥ मधुः
 मानो वनस्पतिर्मधुमा ॥ ७ ॥ सूर्यः माध्वी ॥ ६

ज्योतिर्गंतु नः मधुर्मधुर्मधुः ॥ मण्डलमध्यापुष्प
 क्षतं निधाय ॥ अत्र वाक्यपुर्ववत् ॥ विष्णुदेवादिसप्त
 द्वारमातृकासंकेल्यसिद्धिरस्तु ॥ सशार्द्धमस्तु कालातीतवे
 लातीततत्सर्वं निर्दोषमस्तु ॥ अत्र गंधादि ॥ ॐ देवसवि
 तः पुसवयन्तं पुसवयन्तं पतिं भगाय ॥ दिव्यो गन्ध
 र्वः केतनः पुनातु वाचस्पतिर्वाजनः स्यदनु स्वाहा
 किंचित् रजलधारा सर्वेषां दत्वा ॥ अत्र संकेल्य अक्षि
 दमस्तु ॥ ततो गवाचनं ॥ आवाहनादिपूज्य ॥ ॐ न
 दायेश ॥ भद्रायेश ॥ सुभगायेश ॥ जगन्मातृकाभ्यो २
 कपिलादिपंचगोमातृकाभ्यो २ ॥ ब्रह्माण्यद्वाहमा

तृका भ्यो १ गणपत्य १ विद्येश्वराय १ एकदंताय १
 रंकोदराय १ पशुहस्ताय १ सिद्धि विनायकाय १ वहि
 द्वारांगणे भ्यो १ स्थानक्षत्रपाले भ्यो १ एवं हस्ता
 द्यवन्दनयत्नोपवीत पदीप ॥ अत्र गंधादिमात्र
 लसोत्र ॥ ॐ नमोगये नमस्तेश्वंदिताशिवसिद्धे न
 विश्वामित्रे न जंकुना ॥ कपिले हर मे पापं ज नय ॥
 उः कृतं १ गावो ममागृतो नित्यं गावः पृष्ठं तुरक्ष मे
 गावो मे हृदयश्चापि गवां मध्ये वसामेह ॥ सौरभे
 श्री गंगामाता देवानां ममृतं प्रिये ॥ गृहानवरदेः
 गासंमिप्सितार्थं वदेहि मे ॥ अमृतमथ नोत्पन्ना

१७

सुरभी लोकधारिणी ॥ इदं गासंगृहाण त्वं इदमे
 व तमुत्तमं ॥ आयुर्देहि धनं देहि पुत्रां देहि पशु
 तथा ॥ पशुपुत्तिचिरं देहि धनं देहि गवो ममा ॥
 सर्वसंगलमांगलेति ॥ गणानां गणपतिश्चैव गः
 जयक्रेतुलोचन ॥ पुसं नो वरदो निते वरदाता ग
 णाधिप ॥ मनोवांछितपूजार्थं पूजितो वरपिभी
 सहस्रश्रविष्टहर्तारंगजाधिप तये ॥ इष्टदेव
 दक्षिणां च गोवरपुसादो भवतु ॥ जलधारेण भू
 मयत् ॥ ॥ सृष्टोक्षमस्तु दीपानि न्दशानुश्रविष्णु
 स्त्रीणि पदानि च ॥ एवं वायुपुसश्च नो दीर्घमायुरवा

पुयात्॥ अपा मध्यस्थिता देवाः सर्वमप्सु सुसंस्थि
 ताः॥ ब्राह्मणसंकरे न्यस्तां शिवा आपो भवन्ते ते॥ शिवा
 आपः संतु॥ लक्ष्मीर्वसति पुष्पे पुलक्ष्मीर्वसति पुष्प
 रे चन्द्रास्तसदा गोष्ठे सौमने स्यंददा तु मे॥ पुष्प
 अक्षतं वास्तु मे पाण्यं शान्ति पुष्टिकरं शुभं॥ यद्यदेव
 स्कारं लोके ते तदस्तु सदा ममः॥ अक्षतं॥ विश्वे देवादि स
 र्वेषां॥ दत्तु मातु अक्षी दु मस्तु॥ येषां मध्यतेषां अहोरात्र
 अस्मत्पौत्रा मातु के भ्य संतु॥ अस्मत्पौत्रं नो वर्धतां
 दि वर्धतां आयुरारोग्यं मे श्वर्यं जनय न लक्ष्मी सं
 तति संता न वृद्धिरस्तु॥ मातु ले जल धारा पातयत्॥

१८

दातारं नो विवर्धतां वेदाः सन्तिरेव च श्रु च नामा वा
 गमदुदेयं च नोऽस्तु मे॥ अन्ने श्यो नो वदु भवेदति
 थिंश्च ले भे महि॥ याचितारश्च नः सन्तु मा च याचि
 ष्मकं च न ले भत्वं याति कारश्च संतु ष्च च सुखानि
 च॥ एतदेवा शिषः सन्तु मा याचि गमका धं च न॥ दि
 पदश्च तप्यदा नां शान्ति भवतु पुष्टि भवतु॥ ते
 दग्ने दुर्वे॥ वेदलो फे लं गृह्णत्या॥ जे ले न पुक्षा ल्या॥ सु
 धो च्यतां पृथं तां रतु सि संतु ता भ्यः स्य जास्तु भ्य
 स्य ध्या॥ इति षो उवाच॥ हो पारि जल धारा पातयत्॥
 ततो ब्राह्मणे न वेदा च न॥ पुष्पेः॥ अं मानसो वै॥

॥३५॥

ॐ आर्यगोः॥ ॐ अतिवेदसे॥ ॐ गणानां त्वा॥ ॐ नमो
 गणेशाय॥ ॐ बृहस्पदे॥ श्रीश्वते लक्ष्मी॥ ॐ नमोस्तु
 सर्वभ्यो येके चितये पृथिवीये अनरिश्तेस्तेभ्यो न
 मोसर्वभ्यः॥ ॐ चतुस्वस्ति॥ ॐ स्वस्ति न इन्द्रो॥ ॐ पयः
 पृथिव्या॥ ॐ विष्णो ररात मसि॥ ॐ अग्निर्देवता॥ ॐ द्यौर्ह
 शान्ति॥ ॐ पूरसि॥ दीप॥ ॐ तेजोसि॥ नैवेद्य॥ ॐ
 अन्नपते॥ फल॥ ॐ याफलनी॥ ॐ मनोजोति॥ प्रतिः
 ष्ठा॥ यथा यथा कर्म कु कर्म जु ला उ गु कर्म या य॥ दक्षि
 ना विय॥ वाचने॥ ॐ स्वस्ति ब्रूवंतु मे ब्रूवंतां स्वस्ति॥ अवि
 सेख चन्दनादि आशिर्वादे॥ विसर्जनं॥ विष्टे देवादि

१२

सर्वे अभिगंम्यता॥ न्यास॥ मत्स्यमुद्रां॥ भामि
 विसर्ज्य॥ ॐ देवा गानु विदो गानु वि त्वा गानु
 तुमित॥ मनसस्य त इमं देवे यं सु स्वाहा वा
 ते स्वाहा॥ माण्डलमध्यथ सिंघ्वरे नतिल
 कंधारयत्॥ साक्षि॥ इति यबोदकविधिः॥ ० ॥
 अथ नामकरणविधिः॥ प्वालसद्येलतया वलून
 नाम चो यकलसया देवेनेतय॥ कु१ जाकि कुले
 शचो किडुडु चितय बलि १ प्या नंदु के ते॥ वर्गलह
 ल १२ आकाशमालोहा हाते मालको य सपे॥ थं

उ३॥

कादिसेंपूष्यभाजेनयाय॥ब्राह्मनस्यंकलशाच
 नविधिथे॥जपसोत्रतयाय॥ब्राह्मनपूजा॥शान्ति
 कथंते॥मतफेताचाप्यापूजा॥लासालाहेमिसाठ
 कादिन॥वंसोचकंते॥नृवंहृन॥मिसाथंकादिनअ
 र्घपात्रयालंषनहाय॥स्थानतनेके॥शान्तिकेस्थांवि
 य॥मिसाथंकादिनमतफेताचास्यगंनंत्याय॥अ
 र्घपात्रलंषहाय॥स्वगणाशिर्वाद्॥उवालंत्याय॥का
 यजुसाजदंरुस॥ह्याचतारवदंरुसनामका
 ने॥नृसिका॥धिलपाशान॥ब्रह्मनंस्वस्तिवाचनपठे
 ~आगमकाशावउद्दिष्टकलंषद्वेय॥लेहगोथेले

२०

जातजुवदथासतय॥आशिर्वाद्॥ॐकायस्थाहा
 केसैश्स्थाहाविमायितायस्थाहामनःपुजाप
 तयेस्थाहाचितंविस्तोतायादित्येस्थाहादित्येम
 ह्येस्थाहादित्येसुमृदिकायेस्थाहासरस्येस्थाहासर
 स्येथागकायेस्थाहासरस्येवृहत्येस्थाहापूष्मेस्थाहा
 पूष्मेपुपथायस्थाहापूष्मेनरंक्षिषायस्थाहात्यक्षेनु
 र॥शोपायस्थाहात्यक्षेपुरुषायस्थाहाविष्मवेस्थाहावि
 ष्मवेनिरूपायस्थाहाविष्मवेसिपिविष्णुयस्थाहा॥पु
 तिष्ठा॥मनोजोति॥अनेसंकल्प॥दक्षिणा॥वाचनंलं
 षकलेद्वेते॥न्यासावसर्जन॥कलसाभिसौषआसिर्वा
 द॥सूर्याताकेतंके॥द्वारसद्वेय॥दुकेविवे॥वाक्षिथाय॥थ

तामपतंति
 तामपतंति
 तामपतंति

कादि कादिमो चारुया ॥ इति नामकरण ॥ ॥ ततोषष्ट
मासे फलाने प्रास नं कारयत ॥ इथ कुतु यिन को से
साधु लिख मतं दय के यां ये वा कके ॥ कुमार स्नाने मा
ले को वस पे ॥ को ले स द्वा सो वलि ॥ म चो याले त से को
या ॥ तव पिडि ड स भे ले लं ते ॥ स्वर्गो न स ॥ पउ गाल ड
ते ॥ भे चो स ॥ पुठि ॥ अलं कार ते ॥ गृह मा ला के र्श ते
भं कादि न पूष्य भा जने ॥ ब्राह्म न स्यं क ल शार्च न विधि
ध्या जय सो त्र ॥ ब्राह्म न पूजा ॥ शान्ति का ॥ मत फता उ
चा पूजा ॥ कुमार ला से य ॥ सति का स ने मा ता सह
स्थित्या ॥ नृमं द न ॥ अर्घ्य पा व लं ष न हा य ॥ स्नान त

केतवो तु विश्वतो दक्षा सो अपरीता स उभिदः ॥ देव नो य
था सद मिदु ये अस न्न प्रा यु को रक्षितारो दिवे दिवे ॥ ॐ इ
दं विष्णु वी च के मे ॥ भद्र पीठे निष्का य ॥ ॥ वा य व र्वा य वा
नो प्रो ति पुरो दा से ह्वी कुं क्षा द न्दा भि स्मानि देव शो ते न
डो ला कल सं का भी भ्या मं त नु सु ते स्था रि भिः स्था री रा
प्रो ति ॥ ॥ नि डा कल से षा प्य ॥ नि डा कु ति ॥ व स्त्रे ला
का य ॥ ॥ देव ना डी सं धा न ॥ पंच सु ब्रं हि ने ॥ त्रित
व स्त्रे ध्व न ॥ ॐ भूः स्वा हा ॥ ॐ वृ ह स स न ॥ ॐ भव
ः ॥ ॐ विष्णो र रा त म सि ॥ ॐ स्व २ ॥ ॐ नमः शं भ व
य च ॥ शि ल से ॥ थ थे पा लि नु ग क पा ल लो म वि लो म
नं सो धो ना ॥ नि डा या ना रं हो य ॥ ॐ स म क्षे दे वा

धीयासंदक्षिणायोरुचक्षुसामाम आयुःप्रमोषीमो अहंतव
 वीरं विदेयंतवदेवीशं दृशि ॥ ॥ देवपुत्राकापदुलो देवदश
 ॥ २१ ॥ यायाया ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिर
 सि ॥ माता हि षुंसीन्मा मा हि षुंसी स्वाहा ॥ योनिकल्पनाया ॥
 ॐ भुवः ॥ ॐ गर्भो अस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनां ॥ गर्भो
 वनस्पतीनां गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्निगर्भो अपामसि ॥
 गर्भो धानां ॥ ॐ भुवः ॥ ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति
 नः पूषा विश्ववेदा ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पति
 र्दधातु ॥ पुंश्रवणं ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ मा हि र्भू मा र्भृदा कूर्तमल
 आता नानर्षा प्रेहि ॥ घृतस्य कुल्या उपत्र तस्य पथ्या अनु
 ॥ श्रीमंतो नयनं ॥ ॥ ध्वते गर्भसदेवा ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॥ ॐ
 प्राणाय स्वाहा ॥ ॐ प्राणाय ॥ वा नाय ॥ चक्षुषे ॥ ॐ ॥ २२

॥ २१ ॥

॥ २२ ॥

२२

नाय ॥ वाचे ॥ मनसे ॥ ॥ जातकर्म ॥ गोय सिंघनसि
 तुपालु इमु चोकर चो अं गू दाय ॥ ॥ ॐ वीराय ॥ ॐ ब्रह्म
 यज्ञो नपुथ ॥ निष्क्रमन ॥ घृतप्राशन ॥ ॐ भुजो देव ॥ का
 य ॥ कस्मै ॥ कतमस्मै ॥ स्वाहा विमाधी ताय ॥ ममः
 प्रजापतये ॥ चित्तविज्ञाय दित्यै ॥ दित्यै मद्यै ॥ दि
 त्यै सुमृदिकायै ॥ सरस्वत्यै ॥ सरस्वत्यै पावकायै ॥ सर
 स्वत्यै बृहत्यै ॥ पुष्पे ॥ पुष्पे पुपथ्याय ॥ पुष्पे नरयि
 काय ॥ त्वष्ट्रे ॥ त्वष्ट्रे तुरी रूपाय ॥ त्वष्ट्रे पुरु रूपाय
 ॥ विष्णवे ॥ विष्णवे निरु रूपाय ॥ विष्णवे द्विपि वि
 दाय ॥ ॥ नामकृया ॥ ॐ भूर्भुवः ॥ ॐ योः प्रलनी ॥
 फलप्राशन ॥ ॐ धीयो योनः ॥ ॐ अन्नपतेऽन ॥ अन्न

प्राशनं॥ ॥ॐ प्र चोदयात्॥ॐ मूर्धनं नदिबो अरतिं प्रिस्थि
 या वैश्वानर मृत आजायत मज्जिनं कविषु समाज मतिथिं ज
 २३ नाना मासं ता पात्रं ज नयंति देवा॥ चण्डाकार्णा॥ॐ मर्हि १॥ॐ
 भडं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भदं पश्येमाक्षभि र्यजत्राः स्थि
 रै रङ्गै रसुषुं सस्तु नु भिव्यसे महि देव हितं यदा यु॥ कर्णा
 भेद॥ चापं तये॥ॐ धियो १॥ॐ वृत्तं काण तव तं काण ताज्जि
 वृत्ताज्जि यतो वनस्पती देवी धी र्यं वना महे सु मृदिकाम
 भिस्तये व र्चो अद्भि॥ वृत्तव न्य नं॥ यथा देव स्य गाय
 त्री प्रदानं॥ॐ भर्गो देव १॥ॐ वृत्ते नदि क्षा मा प्रोति दी क्ष
 या मा प्रोति द क्षिणा १ शर्द्धा मा प्रोति स र्व या स त्व मा प्य ॥२३॥
 ते॥ दिक्षा प्रदानं॥ॐ स्वधी मर्हि १॥ॐ आ कृ णे नर जसा॥
 ॥७॥

समावर्तनं॥ॐ धियो जो न १॥ॐ त्रियम्ब के ज जामहे
 ॥ विवाहे॥ सत भृणि का ह्यय॥ फलिनि प्रशाद पति नीते
 वाक्कां दु य सक था सं॥ॐ प्र चोदयात् १॥ॐ काण्डात् १ प्रो हं
 ति परुष पुरुष स्पदिर वा ना प्रतनु सह से न सते न चा भ्रम
 न जात्रा अवीर हो ले॥ देव स्ये मता फा ताल चां त्यो य॥ चेन्द ना
 दिस फार ति॥ॐ मनो जो ति प्र तिष्ठा॥ ॥३॥ ति देव दश रुत्या
 जथा देव स्य मू ले मन्त्रे न जी वं न्या सा॥ दश भाग जीव स क भा
 ग देव स्य नव भाग स्व जीव॥ आहु ति देव मू ले न॥ १०५॥ ५४
 आ ज्य आहु ति॥ॐ पुरा त्पुर स्य वि सृ णो विर प्ति नु दा दा य पृ थि
 वी जीव दा न म॥ यामे र यं श्र न्द म सि स्थ धा भि ष्ठा नु धी रा
 सो अनु डि क्र य य ज ते॥ प्रो क्ष णी रा सो द य हृ ष ते व धी सि

२४ ॐ मनस्त आया यतां वा ते आया यतां प्राणा सा आ० चक्षुः
 ० ॐ श्रोत्रं त आ० यतैर्कुर यदा स्थितं त त आया यतां नि
 स्त्वा यतां त तै सुष्येत्तु सम होभि ॥ ॥ देव या ह्यवेने पंचव
 लि विय ॥ ॐ समक्षे देव्या ध्या या सं दक्षिणा योरु चक्षुः
 सा ॥ ॥ मा मः आ युः प्र मो क्षी मो अ ह न्त व वी दं वि दे यत
 वं दे व स न्दृशि ॥ ॐ धृतं धृत पा का हा पि वत व सा न्वे सा प
 का हाः पि वता न्ते रि क्ष स्य स्या हा ॥ दि सः प्र दि श आ दि सो
 वि दि शः उ ग्दि शो दि ग्भ्यः स्या हा ॥ ॐ ग णा नां त्रा ग णा प
 ति ॥ ॐ न मो व भू शाय का पि ॥ ॐ अ म्ये अ म्ये के अ म्या
 लि के न मो न यति के श्र नः परि ष ति दु र्ग णा वि श्वा
 नां वे व सि न्दु दू रि ता त्प जिं ॥ ॥ ॐ ते पंच व लि ॥ पू ज ने च २४

सं त्रे ण आ ह ति वि य ॥ ॐ आ यु ज से न के ल्य तां पुं स्ता हा ॥ ॐ प्रा
 णो य से न के ल्य तां पुं श ॥ पा नो य से न के ल्य तां पुं श ॥ वा नो यः
 से न के ल्य तां पुं श ॥ दा नो य से न के ल्य तां पुं श ॥ स मा नो य से
 न के ल्य तां पुं श ॥ च क्षु य से न के ल्य तां पुं श ॥ श्रो त्रं य से नः
 के ल्य तां पुं श ॥ वा क य से न के ल्य तां पुं श ॥ म नो य से न के
 ल्य तां पुं श ॥ मा त्मा य से न के ल्य तां पुं श ॥ ब ह्मा य से न के
 ल्य तां पुं श ॥ ज्यो ति र्य से न के ल्य तां पुं श ॥ स्व र्य से न के ल्य तां
 पुं श ॥ पृ थ्व्यं य से न के ल्य तां पुं श ॥ य क्षी य से न के ल्य तां पुं श
 स्ता हा ॥ इ त्या कृ ति ॥ दे व स्य जी व न्मा स ॥ स प्र प्र णा व न्मा स

ॐ भृगाय त्रिकन्द अग्निदेवताय ॥ ॐ अग्निदेवताय पुनरे
 दध्यै हव्यवाहसुपववे ॥ देवाय आसादयादिह ॥ तामि
 ॐ भृगः उन्मिरेकन्द वायुदेवता ॥ ॐ तव वायुवृहस्पति
 त्वस्तु यामातरयुतः ॥ अपा पुं स्यावृणीमहे ॥ **हृदि** ॥ ॐ
 सृष्ट अनसृष्ट पृन्द आदित्यदेवता ॥ ॐ आदित्यगर्भ
 पयसा सहसुस्यप्रतिमां विश्वरूपम् ॥ परिवर्द्धिरः
 सामाभि मधुं स्याः शण्युषं कण्ठहि चोयमानः ॥ ॐ
 महः वृहति कन्दवरुणी देवता ॥ ॐ वरुणास्योतं भनम
 सिवरुणस्यस्यं मे सज्जनीस्थो वरुणा नेते सदं ससि
 पु ॥ वरुणास्यनेते सदं न मासीद ॥ **शिरसि** ॥ ॐ जनेः २५

पंक्ति कन्द उन्मिरेकन्द देवता ॥ ॐ उन्मिरेकन्द आसादेता वृहस्पतिर्दधि
 नायतः परयेतु सोमं देवसेना नामाभि वंजनीनां जयं
 तिनं मरुतो जं त्वयं ॥ **सिरसि** ॥ ॐ तपः त्रिष्टुप पृन्द वृ
 हस्पतिदेवता ॥ ॐ वृहस्पति अति ॥ **तलो** ॥ ॐ सत्यं ज
 गती कन्द विश्वेदेवा देवता ॥ ॐ विश्वेदेवस्य नतुर्मतो
 वरीत सक्षम ॥ विश्वेदेवस्य यथी पुव्यति दुमं पुक्षसे स्वाहा
 ॥ **मदि** ॥ देवस्य मूले न होम १० ॥ ॐ सप्तत्रेक्षयः प्रतिहि
 ता सरीरे सप्तत्रेक्षति सदमपुमादं ॥ सप्तापः सप्तलो
 कमी युसत्र जायतो अश्वपुजो सत्रसदो च देवो ॥ ॥
उक्त्या ॥ ॐ विभाति वतु सोममहा युद्धं व्यद्यत्त पताव
 विदुतं वातजुतो यो अभिरक्षति गमनापुजाः पुषोष पुरुषा
 विराजति ॥ ॐ सहस्रशीर्ष पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात ॥ स

भूमिं सर्वं तत्सृज्यति च दृशा कुले म॥ ॐ अ॒भ्यः समू
 तः पृथिवी रसाच्चिद्विष्वक् कर्मण समवर्तता ग्रे तस्य त्वष्टा
 धिदेवदृष्टमेतितस्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमः ॥ ॐ आशुः
 शिशो नो वैषम्यो न भीमो घनाघनः क्षौभ न श्रवणी नाम ॥
 स केन नो निमिषः एकद्वारः शतं सैन्यं अजयत्साक
 मिन्द्र ॥ ॐ नमस्तैरुदमज्यवः ३ तोतः ३ ष्वे नमः वाकुभ्यां
 ॥ २६ ॥ सुतै नमः ॥ ॐ यज्जागृतो दूरमुदेति देवं तदु सुप्सु
 तथैवेति ॥ दूरं गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः ॥ शि
 वसं कल्पमस्तु ॥ इति वेद षडङ्ग ॥ देव आहुति ॥ ॐ मनोजो
 तिपुतिष्ठा ॥ इति जीवे न्यास ॥ ॥ अथ ध्वजा पूजा ॥ ॐ त
 स्यते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः ॥ पुनैतत्संकेयं ॥
 ॐ पवित्रेष्टो ॥ ॐ नमो जे शुभि ॥ ॐ आपो आत्मा न्माते २६
 पृ॥ १ः श्रुत्य यत्तु द्युते न नो द्युतः पुन नु विष्वक् द्दिरिपु

यो रुचक्ष साम म २

म्पु वदति देवी रुदिदाभ्यः शुचिरा पूतयामि ॥ ॐ समक्षे दे
 वाधीया संदक्षिणा आयुः प्रमोक्षि मां अहं तव वीरं विदेयते
 देवी शं दृशी ॥ ॐ तत्त्वो जामि ॥ ॐ देवस्य त्वा ॥ ॐ अस्माकमि
 न्द ॥ ध्वजा ता आहुति ॥ ॐ अस्माकमिन्द्र ॥ पूर्णा ॥ ॥ पंचसु
 त्रकालिकायां देव पूजा ॥ न्यासादि मूलेन ॥ देव यादो नमा
 लको आहुति विद्या ॥ मूलेन १०८ कुत्वा ॥ ॐ पूर्णा दीर्घपरा
 पत सुपुर्णा पुनरापत ॥ वस्त्रे वक्त्रे नावहा इष मूर्ज पुंशः
 त केतो स्थाहा ॥ इति पूर्णा ॥ ॥ ॥ देव स्थापना या यजु लसा
 विसर्जन या यदेवा ॥ गजु लिजु सा भाजित यके ॥ ॐ आया
 रशक्त ये १ ॥ अनन्ता म्माय १ ॥ स्कंदो स नाय १ ॥ नारा
 स नाय १ ॥ पद्मा स नाय १ ॥ पद्मा स नाय १ ॥ केशरा स नाय

यश॥ कर्णिकासनाय॥ ॐ वास्तवादिपतयवृ ह्मणेनमः॥
 नैवेको धास्वडा वमालको पूजा॥ ॥ गजुलि ध्वजा वाक्य
 याया॥ अश्व बालाह॥ अश्वदि॥ ॐ भगवन्सर्व भूतेशपाः
 शादोपरिनिर्मितं॥ तस्योर्ध्वे सुसमारोप्य सुवर्णकलः ॥२७॥
 शश्वजं॥ परमानन्दरूपेण श्रद्धा पूतेन चेतसा॥ दौक
 यामिमहादेव गृह्यतां त्रिदशेश्वर॥ राघु शांतिजयारा
 जा सुमिक्ष सुपुजास्तथा॥ हेमलक्षपुदानेन पुण्य
 कोटि १ गुण ध्वजं॥ यावन्तु तप्यते सूर्ये ध्वजेषु वरवर्षि
 ॥२७॥ नि॥ तावद्वर्ष सहस्राणि शिव लोके महीयते॥ यावत्तु चन्द्र
 दिका करौ प्रभवतो व्योमारेण नित्यशो यावन्मिरुहिमाचरे
 प्रभृतयः तिष्ठति पृथ्वी तले॥ कैलाशे गिरि जापति सुरप
 प्र॥

तियावन्ति दीसागराः स्वर्णसत्केतवः ध्वजं निरुपमतावच्छि
 रं तिष्ठतु॥ त्वंगति सर्व भूतेति॥ इति ध्वजा गजुलिका कम्पा॥
 ततः धीरहा लेवा कम्पा॥ होतां श्रुतां च यजमानादि संका
 थियातय मोह १ तया धीरवाक्य॥ ॥ अश्व बालाहक प्ये
 त्पादि॥ यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च भवता काशमेदिनी॥ तावत्तु
 चस्थिरो नित्यं धातव्यं च शिवास्तथा॥ चिरो भवति देव
 शदेवानां मनुमाचरेत्॥ यावच्चन्द्रा क्मेदिन्यां तावत्तु
 चस्थिरो भव॥ निर्विघ्नं क्रियते चार्थसदा कल्याणकारकं
 आयु पुष्टि कं रशांति मायुस्वष्टि यत कुरु॥ न च मारीचः
 उन्मिष्य रोगा नैव शिसं भवेत्॥ न राघु भयभी चैव परच
 के भयापहं॥ इह जन्म सुभुं जीतया चैव परांगति॥ य
 जमानादि सर्वेषां यथोक्ते फल प्राप्नुये॥ स्थिरो भव दीर्घ

२६ ॐ श्राश्रुर्भववाह्यर्धनपृथुर्भवसुखदस्त्वमजनः पुरीषवाह
नः॥ प्रतिष्ठितोसि देवेश देवानामधिपेश्वर॥ यावच्चंद्रार्क
मेदिन्यां तावत्वं सुस्थिरो भव॥ ॥ इति स्थिरं ह्येतत् स्थिराकु
ति १०८॥ ॐ स्थिरो भव विदुः ॐ मनोजोतिपुतिष्ठ॥
यथा देवयाति न देव पूजा॥ पतंगो ह्ययं गजुलिसफलमभि
षेक॥ ॐ आपलनी॥ पुण्याभिषेक॥ ॐ पुनस्त्यादित्यारु
लाजोभिषेक॥ ॐ मनोजोति॥ अक्षताभिषेक॥ ॐ दीर्घा
यस्त्याया॥ कलशाभिषेक॥ यथा देवयो द्योतनं॥ पणयाचो
काकुतिंके॥ यजमानं फया काय ईशान सध्वजानतर्पन
याके॥ ॐ ब्रह्मांतर्पयामि॥ ॐ विष्णुंतर्पयामि॥ ॐ रुद्रं॥ पु
जापतिं॥ देवान्॥ यक्षा॥ नागां॥ गन्धर्वं॥ अप्सरां॥
ॐ भुरां॥ कूरां॥ सप्यां॥ सुपर्णां॥ तरुं जम्भकाः खगा

॥ प्र॥

२८

विद्याधराजलाधारास्तथैवाकाशगामिनः॥ निराधारा
श्च ये जीवाः प्रापेध्वर्मेरताश्च ये तेषां माप्यायना ये तदी
यं ते सलिलं मया॥ इति देवतर्पणं॥ ॥ ॐ सनकश्च सनं
दश्च तृतीयश्च सनातनः॥ कपिलश्चासुरिश्चैव वीरुः प
ञ्चशिखस्तथा॥ सर्वे ते तृप्तिमाया तु मद्भूते नाम्यना सदा
॥ इति सनका॥ ॥ अत्रिश्चैव वशिष्ठश्च पुलस्त्यश्च केतुस्त
था॥ भरद्वाजो विश्वामित्रपुत्रश्च महानृषिः॥ कव्य
वाला नलः सोमो॥ यमाग्निष्यातावर्हिषदा॥ ॥ अज्यपाः
सोमपायान् तृप्तिस्वपितरो मृगाः॥ नरकेषु समस्ते
पुण्यातनास्तु च ये स्थिता॥ बान्धवा बान्धवा ये ये चाः
न्ये जन्मनि बान्धवा॥ तितृप्तिमरिक्खलायानुपश्राः

स्मृतो हि वांछति तर्पयामि ॥ ॥ पितृ तर्पण स्वस्वनामेन ॥
 ॥ जदेव लडु च कावडु तयने ॥ ॥ जातं आहुति विद्य ॥ १०८
 ॐ अस्माकमिन्द्र ॥ इति ॥ जातर्पण विद्यि ॥ ॥ धर्मनिस्तं
 पंचगव्य विद्य ॥ ॐ पवित्रेष्टो वैष्णवो सवितुर्बः प्रसवतु
 त्पुनां म्यादि देण पवित्रेण सूर्य स्यर सिभिः ॥ ॥ बलंदं
 के वि विधि ॥ ॥ कलशादिसकलथा संपूजा ॥ ॥ धूपदीपफ
 लनैवद्य ॥ ॥ अर्घ्य ॥ ॥ मण्डल जपस्तोत्र ॥ ॥ मण्डल मंडो संत
 य ॥ ॥ देव्याहुति ॥ १०९ ॥ ॥ देव्यावेद नत्वाय ॥ ॥ वासं ह्वाके ॥ ॥ पु
 ठियातं आहुति ॥ ११० ॥ ॐ पावकानः सरस्वती वाजे भिर्वा
 जिनी वती यज्ञं वस्त्र विद्या वसु ॥ ॥ आहुति विद्य १०॥ ॥ त्वं जवि
 ष्टदाति ॥ ॥ पासुका त्वाय ॥ ॥ अथ बलंदाको संपासुकाजोः

कां आहुति ५५ ॥ ॐ ध्रुवासि ध्रुवो यं जजमानो ॥ ॥ बलं
 दाह पुं त्वाय ॥ ॥ संख्या हुति ॥ ॐ मनोजोति प्रतिष्ठा ॥ ॥ अ
 वां सकलें त्वाय ॥ ॥ देवता आहुति विद्य ३ ॥ ॥ देव्यावेद ॥
 राजा याता आशिर्वाह ॥ ॐ राजन्तम ध्योरा न ॥ ॥ प्रजाया
 ता ॥ ३ ॥ ॐ प्रजापते न त्वदेता न्यो ॥ ॥ ब्राह्मण पूजा ॥
 ब्राह्मण त्वाय ॥ ॥ देश वलिता होम १० ॥ ॐ अ संख्याता ॥ ॥
 धराता ॥ ३ ॥ ॐ अस्य कुर्मो ॥ ॥ यजमा प्रतिष्ठा ॥ ३ ॥ ॐ ध्रु
 वासि ध्रुवो यं यजमानो सिं ॥ ॥ यजमानं प्रतिष्ठा ३ ॥
 ॐ श्री श्रुते ॥ ॥ ॐ शान्तिका च २ ॥ ॐ द्यौ ह आंति ॥ ॐ
 हिका य २ ॥ ॐ आं वकं यजामहे ॥ ॥ पुष्टिरस्तु ॥ ॥ वृद्धि
 होमा ॥ ॥ दुर्वीक्षत पयसे जुहूयात् १०८ ॥ ॐ न संकल्प ॥

दिगार्चनघृतदीपवर्तिकावलिसंप्रज्या॥ दीपजायेहृत्वा॥
 घृताहुति॥ ॐ नमो चंका चंपुपडोत्थादि॥ देवानुक्रमेन॥ दक्षि
 णावाचनं॥ देशवलिहरनं॥ संसवघृतप्राशनं॥ प्रणीता
 भिवेक॥ पवित्रमोचनं॥ पूरणाहुति॥ ॥ ॐ अद्योत्थादि॥ वा
 क्य॥ यजमानस्य यथाकार्ये प्रतिष्ठा यज्ञसंपूर्णार्थे प
 र्णाहुतिसुखहर्तमस्तु॥ ॐ देवागानु॥ जपमण्डलसोत्र
 अग्निस्तु॥ यजमानदिआशीर्वाद॥ विधिवत्सांगोपाजेन
 संपूर्ण॥ यज्ञसिंहासने यजमानतयशिवशक्ति ल्हाय
 न्दमंदनादिस्य गोणा शिर्वाद॥ मनोजोतिप्रतिष्ठा॥ सा
 क्षिथाय॥ ॥ क्षमास्तुति॥ ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवायेति
 प्र॥ कायेन वाचेति॥ ॥ इति प्रतिष्ठा समाप्त शुभ्र॥ ॥

गृहपुष्टिष्टायाविशेषदेवतायाता आहुतिविधेत्ताय॥ तुफिब
 ह्मानि॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं॥ कौमारि लोहमा॥ ॐ यत्रवाना॥
 मोहेश्वरि हासा॥ शिवोनामासि॥ वैष्णवि लोहचा॥ ॐ विष्णोर
 राटमसि॥ लूसि वाराहि॥ ॐ अस्य कूर्मो॥ उगल इन्द्राणी॥ इ
 न्द्रदेवी॥ स्वयं चामुखा॥ ॐ जातयेदसे॥ लख चणो
 महा लक्ष्मी॥ ॐ हिरण्यवर्णा॥ रवापाशिवशक्ति॥ ॐ शिवोना
 मासि॥ भैरवभैरवीरवगदगुलि॥ ॐ असंख्याता॥ भैरव
 गदो॥ ॐ अथ वोच॥ रवसिनेरवे श्री लक्ष्मी॥ श्री श्वेते॥ रव
 ट्टा श्री कण्ठ॥ ॐ नमो नीलगुवाय च॥ धर्मे भगवति॥ ॐ
 अम्बे अम्बिके॥ पञ्चकनेतडात्रिशूलनाथमहाकाल ल
 क्ष्मी सरस्वति जम्बू॥ ॐ सद्योजातो यमसितयज्ञमग्निर्देवा
 तामभवत्पुरोगाः अश्वहातुः प्रतिश्रुतस्य द्वाविश्वो हाह

तं पुं ह विरिन्दे वाः॥ चन्द्र सूर्य जय वर वर॥ ॐ चन्द्रमा
 मनसो जात॥ जं जादि नदि नि पर्वरी वार॥ ॐ इ म मे जं जे
 ॥ कुमार खगोल॥ ॐ यत्र वाणा संप॥ विनायक कोल॥ ॐ न
 मो गतो भ्यो॥ नागरयदु भाग॥ ॐ नमोस्तु सर्वे भ्यो॥ भग
 वति॥ कोलाड॥ ॐ समक्षे देवा॥ सप्तत्रिंशत् स्थाने॥ ॐ स
 प्तत्रिंशत्॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र सपा ज्वाल॥ ॐ आवहमम॥ पचं
 वक्र डापा ज्वाल॥ ॐ भित्वा भरनो॥ वतीश योगिनी॥ उवाच
 ज्वाल॥ ॐ शं मा लोक्षी रंतरिक्षं माहि पुं श्री पृथिव्या संभव
 अयं पुं हि वा सो धिति धे ति जानः पुनि णाय महे ते सो भ
 गायः॥ ब्रह्मा जव चर॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानां विष्णु खव चर॥ ॐ
 इदं विष्णु वी चक्र॥ शिव धाय मा॥ ॐ तमीशानं जगतस्त

॥ ७ ॥

चक्षुः ३

स्थुषस्य निधियं जिन्यमवसेकमहेव यं पृषानो यथा वेद
 साम सद्देव रक्षिता पायुरदः सस्तये॥ नक्षत्र मुसि॥
 ॐ अश्वि नाते जसा पाणे न सरस्य तीवीर्य मा॥ वाचे न्दो व
 लेने न्दो यद्विरिन्दिय मा॥ योग काति॥ ॐ योगे योगे तव
 तरे॥ गसरिवा॥ ॐ आरष वो या तु वा नानां ये वा व न स्पती ३
 रनु॥ ये वा व टे पु शी रते ते भ्यः सर्वे भ्यो नमः॥ हेतु कादि धाम॥
 ॐ नमो व भू शा यया धिने नो नाम्पतये नमो १ भव स्य हे
 त्ये जगता म्पतये नमो २ रुद्रा या तता यिने क्षे त्रा नाम्पतये
 नमो नमः सता या हं त्ये व नाना म्पतये नमो ३॥ अशितो गा
 दि म ला सि॥ ॐ नमो सौरुद्र म न्य व उ तो त इ ष वे नमः वाहुः
 भ्यां मु ते ते नमः॥ शिव चो ला सि॥ ॐ शिवो भू त्वा मह्य मग्ने
 अथो सी द शिव सव म॥ शिवो कृ ता दिशः सर्वाः स्व यो नि मि

हासदः॥ शक्तिः अष्टा॥ श्री नमोदरो धरुणोरनीयीणां मनीषा
 योजिनी भुधरि॥ ॐ ह्रीं मालेपीरंतरिक्षं माहि ॐ सीः पृथि
 व्या संभवा॥ अयं पुं हि त्वा स्य धिति सोति जानः पुणित
 यमहते सो भगा य॥ अतस्त्वं देव द्य न स्पते शत वल्गो
 विरोह सहस्र न श्लो विव यं सुहे म स्वाहा॥ ॥ सा॥
 ॐ अर्नत कोटि देव भ्य स्वाहा॥ ॐ विश्वतश्चक्षुः॥ शिव वा
 प्यं धि॥ ॐ शिव शक्तये नमः॥ ॐ कान्त मसि धि नुहि देव
 प्राणायामा दाना यत्ना व्या ना यत्ना दी प्या मनु प्रशिति मा
 युष्मां देवा वद ॥ ॥ हासा॥ ॐ यौ वा ज वे ॥ ॐ तव
 वायु वद स्पते त्वस्तुर्जी मा त र भूत त्रया पुं स्या व न
 न हे ॥ ॥ फ॥ ॥ यं य क्षाय स्वा हा॥ ॐ अग्ने अ

वायु देह नः प्रतितः सुमना भवा पि नो अह सह
 सृजित्व पुं हि ध न दाऽ अ सि स्वा हा॥ ॥ कुले॥
 ॐ यक्षायै नमः॥ ॐ प्र नो यक्ष त्वर्थ मा प्य पूषा पृवृह
 स्पतिः॥ प्रवाग्देवी ददातु नः॥ ॥ त्वा क॥ ॐ य
 क्षा दि भ्यः॥ ॐ नदी भ्यः पौञ्जिष्ट मृक्षी का भो नै
 पाद म्पु रुष द्या ग्या य दुर्म दं ॐ धृवा प्यसरो भ्यो वा
 त्य म्पु यु॥ ॐ उ न्म ते पुं स प्य देव जने भ्यो प्यु ति
 पद म ये भ्यः कित व मी र्या ता याऽ अ कित व म्पि॥
 उ म्॥ ॐ धर्म य न॥ ॐ वृ तं कृ त वृ तं कृ त ता ग्नि व
 ह्ना ग्नि र्य शो व न स्पति र्य जि यः॥ देवी पियं मना
 महे सु मृ णी काम नि वृ ये व र्चं चां स त वा ह स पुं

सुतीर्थनो असहसे ॥ ॥ ता च ॥ ॐ कर्मय ॥ ॐ वि
 भो नु कं वी र्थाणि प्रवो चयः पार्थिवानि विममेरवा
 ॐ सि सो अस्म भा य दु ते र ॐ स व्य स्थं वि चे क्र मा ए
 स्वे वो रु गा यो वि स्म वे त्या ॥ ॥ अ ध र्म ता ल ॥ ॐ अ
 ध र्मा य ॥ ॐ ब्रा ह्म णा सः पि तरः सो म्पा सः शि वे नो
 द्या वा पृ थि वी ॥ अ ने ह सा पू षा नः पा तु ड रि ता दृ ता वृ थो
 र क्षा मा कि न्तो ॥ अ ध द्रा ॐ स ॥ ई श त ॥ ॥ ज ॐ ॥ ॐ व रु णा
 य ॥ ॐ व रु णा स्मो तं भ न म सि न रु णा स्मं भ स र्ज नी स्थो
 व रु णा स्य ऋ त स द न्य सि ध रु णा स्य ऋ त श द न म सि न रु ण
 ऋ त स द न मा सी द ॥ ॥ वि कुं ॥ ॐ चो चं डा य ॥ ॐ अ
 सं ख्या ता सह आ णि य रु द्रां अ णि भू म्यां तेषां ॐ सह श्री
 ज ने व ध्यं न्या त न म सि ॥ ॥ वं ता ह ॥ ॐ लुं ईं डा य ॥ ॐ

ब्रह्मा एष ॥ ॐ वा तार मि द ॥ ॥ आ ग्ने य कु ल ॥ ॐ रूं
 अग्ने य ॥ कं मा हे ष्य र्थे ॥ ॐ अ ग्नि मू र्धा ॥ ॥ द क्षि
 ण ॥ मूं य मा य ॥ ॐ वं को मा र्थे ॥ ॐ य मे न द ते त ॥ ॥
 नै नै र्थे ॥ ॐ हूं नै नै र्थे ॥ ॐ वं नै नै र्थे ॥ ॐ यं ते दे वी
 प श्चि मे ॥ ॐ वं व रु णा य ॥ ॐ तं वारा ह्ये ॥ ॐ इ वं मे व रु
 ण ॥ ॥ वा य वे ॥ ॐ रूं वा य वे ॥ ॐ पं इ डा य ए ये ॥ ॐ त
 व वा यु व ह स्य ते ॥ ॥ उ त्रे ॥ ॐ मूं कु वे रा य ॥ ॐ यं वा
 मूं डा र्थे ॥ ॐ कु वि दं ग ज ॥ ॥ ई शाने ॥ ॐ हूं ई शाना य ॥
 ॥ ॐ शं स हा ल क्ष्मो ॥ ॐ त मी शानं म स्य ॥ ॥ आ ग्ने
 य स्य त ॥ ॐ वं कु मा रा य ॥ ॐ य द कं दः पृ थ मं अा य मा
 नः ॥ उ य न्ते मु द्रा दु ते वा पु री षा त र्थे न स्य प क्षा हरि ण
 स्य वा ह् ॥ उप र्तु न्य म्म हि जा त ने ॥ अ वं न ॥ ॥ नै नै

प्रति

त्वस्वत॥ ॐ गूं गणापतये ॥ ॐ गणानां त्वा ॥ ॥ वायु
 वस्वत॥ ॐ यों योगिनीभ्यः ॥ ॐ अम्रे अम्रिके ॥ ॥ वा
 ईशानस्वत॥ ॐ ईं क्षत्रपालाय ॥ ॐ नमो वभ्लेशा ॥ ॥ वा
 य॥ ॥ पातालकेटि ॥ ॐ पातालाय ॥ ॐ येवामीरोच
 ने दिवो देवा सूर्यारस्मिंषु ये वामप्यु सदस्य ते तेभ्यः
 सर्वेभ्यो नमः ॥ ॥ तले ॥ ॐ मत्प्राय ॥ ॥ स्यो नापृथि
 विनो भवानृक्षानिवेशनीय कानः शर्मसप्यथाः
 ॥ ॥ चोता ॥ स्वर्गाय ॥ ॐ दिवो वा विष्णु उत वापृथि
 याम हो वा वि उत रत्न रिक्षात् ॥ ॐ भाहि हस्ताव
 सु नापृण स्वाप्य य द्दक्षिणा दीत स द्या दधु
 ये त्यो ॥ ॥ था ला पुलके दाते ॥ ॐ ईं स्थान क्षत्रपाला
 य स्वाहा ॥ ॐ अस्वरयाता सहस्रानि ये रुद्रा अतिभ्य

म्यांतेखाँसहृभ्रयोजनेभ्यःवंन्यात्तेन्यसि॥ ॥अ
ष्टदिग॥ ॥ॐब्रह्माण्यादिभ्यः२॥ॐब्रह्माणिमेमत
यः३॥ॐसुतासःशुष्मर्यतिप्रभृतेमेअडिः॥अ
शासतेप्रतिहृयंत्युक्तेमाहरीब्रह्मस्तानोअह
स्याहा॥ ॥तुफिनकीहिसखाया॥ॐब्रह्मणे२॥ॐ
ब्रह्मयज्ञानं॥ ॥पाशुकाअदुवाफोसिकचा॥
ॐरक्षाये२॥ॐत्यंजविष्टदा॥ ॥सखिरियपः
रद्यायगंगा॥ॐरक्षोहनंवल्लगहनंवेभ्रवीमिद
महंतंवल्लगमुक्तिरामियन्मेसमानोयमस
मानोनिचषानेदमहंतंवल्लगमुक्तिरामियमे
सवन्धुर्यमसवन्धुर्निचषानेदमहंतंवल्लग

मुक्तिरामिचमोसनिन्योयमसजातोनिचरवानो
 त्कृत्याकिरामि॥ ॥ यथाशक्ति लक्ष्मीयात आहुति
 ॐ श्रीं ह्रीं लक्ष्म्यै नमः ॥ ॐ हिरण्यवर्णा ॥ ॥ वसिष्ठः
 यादेवयादेवयात आहुति ॥ ॐ संख्याता ॥ ॥
 देसखायपंचपलवहाङ्गगुणस्तकार्कापकाअक्ष
 तभूस्याभुर्जपत्रगूतेद्वोअपामार्गफोरिक्च
 देवाया ॥ ॐ रक्षाह नवलग्ना ॥ ॐ त्वं जविष्ठदा ॥ चंद्र
 ना ॥ सिंदूर ॥ ॐ त्वं जविष्ठदा ॥ स्वर्गा ॥ ॐ दधि कापूर्णो
 सिफूरतिप्रतिष्ठा ॥ ॐ यापलनी ॥ ॐ तेजोसि ॥ ॐ
 मनोज्ञति ॥ ॥ इति पूजा ॥ ॥ संख्या कृतिराजोदे
 शयजमान आचार्यदेशपाति ॥ देशवलिशान्तिपुति